जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

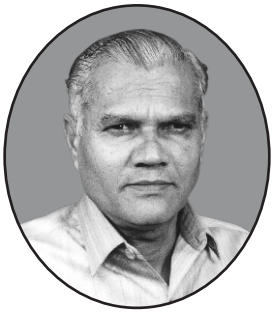

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५२ वे ❖ अंक १२ वा ❖ ऑगस्ट २०२१ ❖ वीर संवत २५४७ ❖ विक्रम संवत २०७७

या अंकात	पान नं.		पान नं.
• चातुर्मास का महत्त्व	१५	• मन का स्नान है महत्त्वपूर्ण	५७
• साधना का महत्त्व	१८	• हास्य जागृति	६०
• अंतिम महागाथा ३० : धर्मचक्र प्रर्वतन	१९	• कोरोना काळात जैन जीवन पध्दतीचे महत्त्व	६१
• कव्हर तपशील	२४	• कर्मयोग है सर्वोदय का राजमार्ग	६२
• धर्माच्या कॉलम मध्ये फक्त जैन लिहा	२५	• नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले	६३
• दानवीर श्री. सुभाषजी रुणवाल, मुंबई	२९	• अरिहंत जागृति मंच - निबंध स्पर्धा	६४
• सफल होना है तो : प्रार्थना प्रभु तक खत पहुँचाने का जरिया	३०	• जिव्हाळ्याचे बंध - रक्षाबंधन	६५
• सुखी जीवन की चाबिया : पंद्रह सद्‌गुण उपासना - लज्जा	३१	• श्री. वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय चातुर्मास सूची २०२१	६९
• श्रमण धर्म में चातुर्मास क्या ? क्यों ? कैसे ?	३८	• महाराष्ट्र प्रांत श्रमण संघीय चातुर्मास सूची २०२१	७०
• ऐसे हुई जब गुरु कृपा : कौशल अपणो नहीं छुपाणो	३९	• दानवीर भामाशाह जयंती	७४
• जीवन बोध - अंधे का पूर्वाग्रह	४१	• मुथा परिवार - सिटी स्कॅन मशिन	७५
• जैन धर्म और विज्ञान	४३	• नामको हॉस्पिटल, नाशिक	७५
• कोरोना ने आम्हांला शिकवल !	४६	• जागृत विचार	७६
		• सिध्देश्वर शिव मंदिर ट्रस्ट, गोशाला - सरुल	७६
		• सुर्यदत्ता - स्त्री शक्ती पुरस्कार	७९

- सुर्यदत्ता – स्टार्टअप फेस्टिव्हल ८०
- Education in Pune–पुस्तक प्रकाशन ८२
- श्री. हस्तीमलजी मुनोत – पुरस्कार ८३
- श्री. आनंद पार्श्व गुरुकुल, अहमदनगर ८४
- श्री. अनिलजी पोखरणा – चेअरमनपदी ८७
- श्री. सुभाषजी गादिया – चेअरमनपदी ८७
- Return टिकीट तो कन्फर्म है ८८
- पुणे शहर स्थानकवासी चातुर्मास ९०
- पुणे शहर श्वेतांबर मुर्तिपूजक चातुर्मास ९१
- पुरग्रस्तांसाठी रांका ज्वेलर्स परिवाराची मदत ९२
- श्री. मितेशजी कोठारी – डायग्नोपिन, पुरस्कार ९३
- आचार्य रत्नसेनसूरिश्वरजी म.सा. – ९३
- प्रा. सुरेशा कटारिया, पुणे ९३
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर • एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

• www.jainjagruti.in
• www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

चातुर्मास का महत्त्व

प्रवचनकार : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

हम और आप चातुर्मास के परम पुनीत पावन प्रसंग से लाभान्वित हो रहे हैं । चातुर्मास, साधनों का सदुपयोग कर साधना के मार्ग पर चरण बढ़ाने का सन्देश लेकर आया है । हर पंथ, हरेक परम्परा के सन्त, लोकमान्यता, धर्म और दर्शन चातुर्मास की प्रमुखता, पवित्रता और प्रगतिशीलता को मान्यता देते हैं ।

जल की महत्ता

जीवन संदर्भ को लेकर प्रमुखता का कारण 'जल' रहा है, क्योंकि-जल जीवन है । एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जितने भी प्राणी हैं, उन सबका जीवनाधार जल है । जहाँ जल है, वहाँ विकास है । जहाँ जल नहीं है, वहाँ सब तरह से ऱ्हास है । प्राचीन पहेलियों में एक पृच्छा की जाती थी कि बारह में से चार निकाल दिए जाएँ तो कितने बचे ? सामान्य रुप से इसका उत्तर आठ ध्यान में आता है । लेकिन जब प्रश्न के भाव की दृष्टि से समाधान किया गया तो उत्तर मिला कि बारह में से चार निकाल देने पर कुछ नहीं बचता है । भारत वर्ष, रुस, फ्रांस आदि देशों की भूमि का मुख्य आधार जल है । जल नहीं तो अन्न नहीं है, जीवन नहीं है । जल के अभाव ने ही थली प्रान्त के लोगों को अपनी जन्मभूमि छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया । पहले मारवाड़ के हर क्षेत्र और छोटे-छोटे गाँव में सैकड़ों की संख्या में महाजन मिलते थे । जब वहाँ चातुर्मास होता था तो बड़ी संख्या में आराधना होती थी। वर्तमान में नाममात्र के महाजन भी नहीं मिलते हैं । किशनगढ़ और मदनगंज में रहते हुए एक भाई का आना हुआ । पूछने का प्रसंग आया तो उसने कहा कि महाराज ! मारवाड़ में हम कालू के हैं । अब कालू कहाँ है और हमारा मकान कहाँ है, यह भी मालूम नहीं है । पीढ़ियाँ बीत गई । अनेक स्थानों पर हवेलियाँ और मकान बड़े-बड़े हैं, धन की कोई कमी नहीं है, लेकिन जल नहीं है । इसलिए लोग अपने मकान, दुकान और नगर को छोड़कर दूसरे प्रदेशों में जाकर बस रहे हैं ।

शास्त्रों में नगर के वर्णन मिलते हैं । पूछा गया कि ग्राम, नगर की शोभा किसमें है ? तो उत्तर दिया गया कि - 'नगरी सोहंती जलमूलवृक्षा ।' जहाँ जल, ज्ञान और सम्पत्ति हैं, वहाँ नगर की शोभा है । इसलिए प्रमुखता से प्रत्येक प्राणी के जीवन का आधार जल है । चातुर्मास में जल की प्राप्ति होती है, इसलिए प्रत्येक परम्परा चातुर्मास को महत्त्व देती है ।

उष्णता भटकाती है, शीतलता अटकाती है और आर्द्रता प्रवाहमान करती है । परमाणु में चार स्पर्श कहे गये हैं । जब-जब उष्ण परमाणु पुद्गुल बढ़ते हैं, वे गतिशील बनते हैं । और इतने गतिशील बनते हैं कि एक समय में अधोलोक से ऊर्ध्वलोक में चले जाते हैं । उष्णता के कारण गतिशीलता के साथ ही विस्फोटक शक्ति भी पैदा हो जाती है । शीतलता से अकड़न की स्थिति आती है । जल जीवन में प्रवाह पैदा करता है । वीतरागवाणी रुपी जल आत्मा को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता है । यह प्रवाह विकास की ओर बढ़ना चाहिए ।

आत्मा की चहुँमुखी विकास

आत्मा के चहुँमुखी विकास के लिए सभी परम्पराओं के निर्ग्रन्थ चार माह के लिए एक ही स्थान पर स्थिरवास करके साधना करते हैं । उनकी साधना का मुख्य हेतु दया और अहिंसा की आराधना है । इस आराधना के लिए द्रव्य रुप में गमनागमन का निषेध किया जाता है। भगवान महावीर ने अपने अन्तिम वर्षाकाल में श्रमण और श्रावक के लिए जीवों की यतना तथा धर्म की साधना का मंगल सन्देश दिया ।

जीव की यतना कर लीजे रे, जीव की यतना कर लीजे।
आयो वर्षाकाल, धर्म की करणी कर लीजे ।।
मुनिवर तज संचार, काल वर्षा में स्थिर रहते ।
उत्तम श्रावक धर्मी भी नहीं, बिन मतलब भमते–रे ।।
जीव की यतना कर लीजे रे
दान, शील, तप, भाव आराधो, विमल भाव धरके ।
'गजमुनि' सत्य समझ कर सेवा, प्राणी सब जग के–रे ।।
जीव की यतना कर लीजे रे

वर्षावास बाहर में संकोच और भीतर में विस्तार करने का समय है । वर्तमान में वर्षाकाल में बाहर में भटकना, अकारण घूमना, पिकनिक गोठ आदि बढ़ गये हैं, जो असंख्य जीवों की विराधना का कारण बन रहे हैं । यह समय बाहर भटकने के लिए नहीं है, अन्तर्यात्रा करने के लिए है । वर्षाकाल में सभी अपनी–अपनी परम्परा का निर्वहन करते हैं । एक परम्परा के अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी को देवों को शयन करा दिया जाता है । इसलिए इसका नाम उन्होंने देवशयनी रखा है । आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकम तक विवाह–शादी के कार्य निषिध्द रहते हैं । ग्रन्थों के अनुसार चातुर्मास काल में लड़ाई–झगड़े, युध्द आदि भी वर्जित रहते थे । इसे ज्योतिषीय कारणों से मानें अथवा समाज की व्यवस्था के रुप में, चातुर्मास काल में पूरा समय आत्म–साधना के लिए समर्पित होना चाहिए । इस परम्परा को आज भी अधिकांशत: निभाया जा रहा है ।

चातुर्मास में जितना गमनागमन कम होगा, संसार के कार्य जितने कम होंगे, उतनी ही विराधना कम होगी । इसलिए एक–एक कदम देखकर रखने की जरुरत है । वर्षा रुकने पर आप गली, मार्ग या चौराहे पर निकल जाइये, आपको सैकड़ें तरह के जीव–जन्तु, कीड़े–मकोड़े आदि प्राणी देखने को मिलेंगे । यदि यतना नहीं रखी तो उन जीवों की विराधना होगी । इसलिए जीवों की जितनी रक्षा हो, उतना ही अच्छा है । जो लोग जितने ज्यादा अमीर हैं, उतनी ही ज्यादा हिंसा के भागीदार बन रहे हैं । घर में धमाधम कदम उठाकर चल देंगे । घर से स्थानक और सब्जीमण्डी तक जायेंगे तो बिना साधन नहीं जायेंगे । वे बिना साधन घर से बाहर ही नहीं निकल पाते हैं तो जीवों को कैसे बचाएँगे । पैदल चलने वाले व्यक्ति यदि रास्ते में जीवों की पंक्ति निकल आए तो अपने कदम बचाकर रखेंगे । परन्तु वाहन वाले, जीवों को नहीं बचा सकते हैं ।

वर्षा समाप्त होने के बाद जीव बाहर निकल आते हैं। ऐसे समय में जो बिना काम गमनागमन करते हैं, वे हिंसा के भागीदार बनते हैं ।

सन्तों के साथ श्रावकों के लिए भी चातुर्मास

यह चौमासा केवल सन्तों के लिए ही नहीं है, अपितु श्रावकों के लिए भी है । सत्य और शील पर श्रध्दा रखने वाले सम्यग्दृष्टि के लिए भी है । वर्षाकाल में आवागमन करना जीवों की विराधना का कारण है । इस समय आवागमन से बचकर पौषध, तपस्या आदि क्रियाओं के माध्यम से जीवदया का लक्ष्य होना चाहिए । इसके अलावा वर्षाकाल में व्यापारिक गतिविधियाँ भी कम होती हैं । आखातीज की तरह नहीं होती हैं । फलस्वरुप श्रावक भी धर्म की कमाई करते हैं, तो यह समय भटकने का नहीं है ।

मैंने आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.) के चरणों में रहते हुए अनेक ऐसे धर्मनिष्ठ परिवारों को देखा है, जो चौमासे में अपना सब सांसारिक कार्य छोड़कर आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित होकर सन्तों की तरह संवर में बैठने की कोशिश करते हैं । सातारा, औरंगाबाद, धूलिया आदि न जाने कहाँ–कहाँ से श्रावक, परिवार सहित आते और सन्तों की सेवा के साथ धर्म की आराधना करते थे । हम जोधपुर से विहार करके बावड़ी गये । वहाँ घरों की संख्या बहुत कम थी। लगभग बीस–पच्चीस घर होंगे । जब उन्हें सन्तों के आगमन का समाचार मिला तो संघ मन्त्री ने दर्शन करके कहा – ''भगवन् ! जब तक यहाँ सन्त रहेंगे, तब तक दुकानें नहीं खुलेंगी । मन्त्री की

प्रेरणा से, चातुर्मास अथवा पर्युषण का अवसर नहीं होने के बावजूद धर्म की अच्छी आराधना हुई । बीस घरों के बीस श्रावक और श्राविकाएँ रोज मिलते । सामान्य चतुर्दशी का मौका आया तो लोगों ने दयाव्रत की आराधना कर ली । पाँच दिन के लिए गये थे और इक्कीस दिनों तक वहाँ रहे और इक्कीस दिनों तक लोगों ने वहाँ दुकाने नहीं खोली।

चातुर्मास में निषिध्द

आज लोक व्यवहार ऐसा हो गया कि आदमी सहजता में काम करके नहीं चल रहा है । पहले चौमासे में शादी-विवाह नहीं होते थे, युध्द की विभीषिकाएँ भी नहीं होती थीं । लेकिन आजकल वर्जनीय कार्य भी हो रहे हैं । पहले कुछ नीतियाँ थीं । युध्द के भी नियम होते थे । प्राचीन इतिहास को देखो तो मालूम होगा कि भाले वाले, भाले वालों के साथ; तीर वाले, तीर वालों के साथ; हाथी-घोडे वाले, हाथी-घोडों वालों के साथ लड़ाई करते थे । वर्तमान युध्द तोफ और बन्दूक से होता है । सुनते हैं कि आजकल सोये हुए लोगों पर बम फेंक दिए जाते हैं । दुकान पर जाने वाले को, राहगीर को मार दिया जाता है । मर्यादा और नैतिकता के मानदण्ड ही नहीं रहे । पहले सौ तरह के अपराध करने वाला भी यदि मुँह में तिनका धर लेता तो उसे माफ कर दिया जाता था । लेकिन आजकल काल-मर्यादा और परम्पराओं का आदर कम दिखाई देता है ।

तपस्या की अनुकूलता

चातुर्मास काल के सन्दर्भ में एक बात और है कि इस समय जठराग्नि मन्द होती है यानी पाचन शक्ति कमज़ोर होती है । गर्मी में कोई तपाराधना करना चाहे तो कठिनाई आती है । लेकिन चातुर्मास काल में पाचन शक्ति कम होने से बच्चे, बूढे, बीमार, स्वस्थ कोई भी तप करना चाहें तो सहज कर सकते हैं । जब शरीर में पाचन की तेजी होती है तो भूख बहुत लगती है । जब गर्मी की उष्णता होती है तो पानी ज्यादा चाहिए। गर्मी में कभी-कभी निद्रा आने लग जाती है, लेकिन वर्षावास में ऐसा नहीं होता है । इसलिए चौमासे का यह पवित्र समय ऐसा है कि तप के साथ ज्ञान की आराधना करनी चाहिए ।

कषाय-विजय के साथ करणीय कार्य

वर्षावास में क्या करना चाहिए, इस सम्बन्ध में आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.) ने लावणी की तर्ज में फरमाया -

चार कषायों के बन्धन तोड़ो,
विकृत कचरे से मुख मोड़ो,
नाता मोक्ष से तुम जोड़ो ।
करके दया-धर्म आराधन, शिव सुख पावना रे ।।१।।
चौदस चौमासे की आई,
करलो धर्म-ध्यान सुखदाई,
जो है श्रेष्ठ जीव मन भाई ।।
तप-जप की लड़ी लगाकर, कर्म खपावना रे ।।२।।

आचार्य भगवन्त ने फरमाया कि ये चार महीने चार कषाय को घटाने के लिए हैं । चार संज्ञाओं से दूर हटने के लिए हैं । स्त्रीकथा, भक्तकथा, राजकथा और देशकथा; इन चार विकथाओं से हटने के लिए और चार धर्मकथाओं से जुड़ने के लिए और चार मंगल की आराधना करने के लिए है । मोक्ष के चार मार्ग हैं - ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप । चातुर्मास में इन चारों की यथा शक्ति आराधना करनी चाहिए । ये चार महिने खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे की आराधना के हैं । इन आराधनाओं से क्षमाभाव बढ़ेगा, सरलता आयेगी और तन-मन की तपन कम होगी । उष्णता घटेगी तो वीतराग वाणी का अमृतपान करने में आनन्द आयेगा ।

आप अपने क्रोध, मान, माया और लोभ को काबू में कीजिए । आग में इंधन डालने से आग बढ़ती है। फैलती है । इसके विपरीत पानी से आग बुझ जाती है । तो यह अवसर कषायों के ताप को घटाने का है। यदि अभी भी अन्दर का ताप कम नहीं होगा तो फिर कब कम होगा ? चार कषायों को घटाइये और चार गुणों को बढ़ाइये । ये चार महीने बड़े सौभाग्य से मिले

हैं। अपने शरीर को अकारण भटकाइये मत और संचरण बन्द कीजिए । आज से तीर्थंकर भगवान की आज्ञा में विचरण करने वाले; महाव्रत, समिति, गुप्ति की आराधना करने वाले जितने भी साधु-साध्वी हैं, वे सब आज के प्रतिक्रमण के बाद एक स्थान पर प्रवास करेंगे। इस दौरान ढ़ाई कोस यानी पाँच मील के सीमा क्षेत्र में आवश्यक कार्यों के लिए उनका आना-जाना रहेगा । सीमित क्षेत्र में गमनागमन भी अत्यन्त यतना पूर्वक किया जाएगा । क्योंकि वर्षाकाल में जीवोत्पत्ति बहुत बढ़ जाती हैं ।

यतनापूर्वक जीवन रक्षण

श्रमण-श्रमणियों को ही नहीं, गृहस्थवर्ग को भी जीवों की यतना करनी चाहिए । वर्षाकाल में होने वाली लीलन-फूलन से बचकर चलना चाहिए । ऐसी लीलन-फूलन हमारे आसपास, घर की छतों पर देखी जा सकती है । पुराने श्रावक छोटे-छोटे जीवों की रक्षा के प्रति भी बहुत सजग रहते थे । रामपुरा के श्रावक थे श्री केसरीमलजी मूथा । वे ऐसे श्रावक थे, जो बारह महीने धर्मस्थान में रहते थे और साधना करते थे । जीवों की यतना के प्रति वे बहुत सजग थे । लेकिन आजकल तो पञ्चेन्द्रिय जीवों के प्रति दयाभाव में भी अभाव नज़र आता है ।

जागने का अवसर

चातुर्मास का यह पावन अवसर जागने और जगाने के लिए आया है । आप सुनने के लिए ही नहीं सुनें, लोकव्यवहार निभाने के लिए ही नहीं सुनें; अपितु आराधना करने के लिए सुनें, सुनकर गुनें और आचरण के पथ पर चलने का पुरुषार्थ करें । यदि इन दिनों में भी आस्त्रव नहीं छूटेंगे; संवर और सामायिक की आराधनाएँ नहीं होंगी तो फिर कब होंगी ?

बन्धुओं ! आप सारे आरम्भ-समारम्भ छोड़कर यहाँ उपस्थित हो रहे हैं तो एक कदम और आगे बढ़ाते हुए संवर और सामायिक में भी आगे बढ़िये । प्रकृति ने तो ठण्डक कर दी है, परन्तु आप ममता छोड़कर समता की ठण्डक कब लायेंगे ? जब लायेंगे तो समझिए कि आपके लिए सोने का सूरज उगा है । यह चातुर्मास सबको कुछ न कुछ करने का सन्देश दे रहा है । जो धर्म की उपासना में लगेंगे, वे आगे बढ़ेंगे । ●

साधना का महत्त्व

प्रेषक : श्रीमती कमला सिंघवी, भडगांव

जीवन में साधना की उपयोगिता है । साधना जीव को शिव बनाती है, साधक को साध्य तक पहुँचाती है । अपनी समस्त शक्तियों को विकास की दिशा में सुनियोजित कर देना ही साधना है । किसी भी साधना की सफलता के लिए व्यक्ति की पूर्ण एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है । इसके द्वारा ही शक्ति का संवर्धन और संयोजन होता है । जैसे एक मूर्तिकार पत्थर से मूर्ति बना लेता है । वह छैनी और हथौड़ा लेकर पत्थर का व्यर्थ भाग हटाता है तो पत्थर में रही हुई मूर्ति स्वयं प्रकट हो जाती है ।

इसी तरह आत्मा के भीतर भी 'परमात्मा' हैं । सिर्फ संयम रुपी छैनी और हथौड़े से व्यर्थ की परतें हटानी है । स्वाध्याय, ध्यान, वैयावृत्त्य, मौन भी साधना ही है इनके साधन से कर्म की महान् निर्जरा होती है ।

पारस पत्थर की भाँति साधना जीवन रुपी लोहे को मूल्यवान स्वर्ण बना देती है । अल्प समय की साधना से भी साधक साध्य को प्राप्त करता है । साधना ही सिध्दि तक पहुँचाती है । इसमें स्वयं को साधा जाता है । ●

जैन जागृति - सप्टेंबर २०२१

*** पर्युषण अंक ***

आजच या अंकाला जाहिरात द्या.

कव्हर तपशील - ऑगस्ट २०२१

❖ श्री. सुभाषजी रुणवाल व सौ. चंदाजी रुणवाल यांच्या तर्फे जीतो आवास योजनेला ११ कोटी दानाची घोषणा. (बातमी पान नं. २९).

❖ निगडी येथील ज्योत्स्नाताई रतिलालजी मुथा, श्री. राहुलजी मुथा परिवारा तर्फे अहमदनगर येथील आनंदऋषिजी हॉस्पीटल सिटी स्कॅन मशिन भेट देण्यात आली. (बातमी पान नं. ७५)

❖ डायग्नोपिनचे डायरेक्टर श्री. मितेशजी प्रफुल्लजी कोठारी यांना पुणे टाईम्स मिरर द्वारा 'भारत लिडर शिप अॅवॉर्ड' राज्यपाल श्री. भगतसिंहजी कोश्यारी यांच्या हस्ते मिळाला. (बातमी पान नं. ९३)

❖ अहमदनगर येथील पोखरणा ज्वेलर्सचे संचालक श्री. अनीलजी पोखरणा यांची नगर मर्चन्ट बँकेच्या चेअरमनपदी निवड झाली. (बातमी पान नं. ८७)

❖ अहमदनगर येथील श्री. हस्तीमलजी मुनोत यांना जितो तर्फे जीवन गौरव पुरस्कार देण्यात आला. (बातमी पान नं. ८३)

❖ केडगाव, अहमदनगर येथील श्री आनंद पार्श्व गुरुकुलच्या प्रथम चरण वास्तूचे उद्घाटन १८ जुलै रोजी झाले. (बातमी पान नं. ८४)

❖ पुणे येथील नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले यांचा वाढदिवस सेवा सप्ताहाने साजरा केला गेला. (बातमी पान नं. ६३)

❖ गौतमलब्धी फौंडेशन, आदिनाथ, पुणेच्या अध्यक्षपदी श्री. दिलीपजी बोरा यांची निवड झाली. (बातमी पान नं. ८५)

❖ पुणे येथील श्री. सिध्दार्थ प्रवीणजी गुंदेचा यांनी लिहीलेल्या Education in Pune पुस्तकाचे विमोचन २१ जुलै रोजी झाले. (बातमी पान नं. ८२)

❖ सुर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्युट, पुणे तर्फे विद्यार्थ्यांच्या स्टार्ट अपचे फेस्टिव्हल आयोजित केले. तसेच स्त्री शक्ती राष्ट्रीय पुरस्कार देण्यात आले. (बातमी पान नं. ७९, ८०) ●

अर्हम् गर्भसंस्कार साधना

सुरक्षित मातृत्व, समृध्द संतान, विश्व कल्याण

मार्गदर्शक : ***प.पू प्रविणऋषिजी म.सा.***

गर्भसंस्कार साधना के लिए संपर्क करें ।

* बिबवेवाडी, पुणे – ९४०३३७७५४१
* शिवाजीनगर, पुणे – ९७३०९३०००७
* कल्याणी नगर, पुणे – ९८५०२६९९६६
* चिंचवड, पुणे – ९९६०८८७४७७
* कोथरूड, पुणे – ८९८३८३३१३७
* आकुर्डी, निगडी, पुणे – ९४०४७२७०९९
* पिंपळे सौदागर, पुणे – ९९६०७८८१७९
* वडगाव शेरी, पुणे – ९६५७७२२८६९
* आंबेगाव कात्रज, पुणे – ९९२२३१९४७८
* केडगाव स्टेशन – ९८९००२३२९१
* अहमदनगर – ९९२२८३०८४१
* औरंगाबाद – ९४२२५२३६७५

कडा, श्रीगोंदा, इचलकरंजी, मालेगाव, नाशिक, मनमाड, जयसिंगपुर के लिए संपर्क करे :

भारत सरकार जनगणना २०२१ – डिजिटल जनगणना

उठा जैन हो... जागे व्हा, जागृत व्हा * जैन बांधव जागृती अभियान

धर्माच्या कॉलम मध्ये फक्त ''जैन'' लिहा.

भारत सरकार दर १० वर्षांनी राष्ट्रीय जनगणना करीत असते. मागील जनगणना २०११ साली झाली व आता जनगणना २०२१ साली होणार आहे. यावर्षी जनगणना पेपरलेस असल्यामुळे टॅबलेट वर माहिती भरुन घेतली जाणार आहे. जनगणनेला लवकरच सुरुवात होणार आहे.

२०११ च्या या जनगणनेत जैन धर्मियांची जनगणना फक्त ४५ लाख दाखवण्यात आली. पण वास्तव मध्ये जैन धर्मियांची लोकसंख्या या पेक्षा बरीच जास्त आहे. जाणकार व गुरुदेवांच्या मते जैन धर्मियांची संख्या २ ते ३ कोटी असावी.

जैन धर्मियांची लोकसंख्या जनगणनेत कमी येणे याला पुढील कारणे सांगता येतील...

☛ जनगणना प्रतिनीधी जेव्हा आपल्या घरी येतो त्यावेळी बरेच लोक धर्माच्या कॉलमच्या पुढे श्वेतांबर जैन, दिगंबर जैन, स्थानवासी जैन, हिंदू जैन, जैन हिंदू, हिंदू, ओसवाल जैन, पोरवाल जैन इ. असे लिहितांना दिसत आहेत. असे न लिहीता धर्माच्या कॉलमपुढे फक्त 'जैन' लिहा. जैन धर्म हा स्वतंत्र व अती प्राचीन धर्म आहे. जैन धर्म कोणत्याही धर्माची शाखा किंवा उपशाखा नाही.

☛ जनगणना प्रतिनीधी जेंव्हा फॉर्म भरतो त्यावेळेस न विचारता धर्माच्या कॉलम मध्ये मनाने धर्म लिहितो. असा अनेकांचा अनुभव आहे.

☛ जनगणना प्रतिनीधी जेव्हा घरी येतो, त्यावेळेस जास्त करुन महिला वर्ग किंवा मुले घरात असतात. त्यांना धर्माच्या कॉलममध्ये काय लिहावे याची जागृती नसल्यामुळे धर्माच्या कॉलममध्ये चूकिची नोंद केली जाते.

☛ फॉर्म भरुन झाल्यावर संपूर्ण फॉर्म नीट वाचून धर्माच्या कॉलम मध्ये ''जैन'' लिहिले आहे का हे पहावे.

जनगणना फॉर्म मध्ये मातृभाषेच्या कॉलम बरोबर अजून कोणती भाषा जाणता असा कॉलम आहे. त्यात आपण 'प्राकृत' पण लिहा. आपले बरेच ग्रंथ प्राकृत भाषेत आहेत. आपण रोज प्रार्थना म्हणतो. त्यातील बरेच श्लोक प्राकृत भाषेत आहेत. जाणणाऱ्या भाषेत ''प्राकृत''चा उल्लेख जरुर करा. सरकारी दप्तरी 'प्राकृत' भाषेचे अस्तित्व टिकवू या.

केंद्र सरकार व राज्य सरकार राष्ट्रीय जनगणनेला आधार मानून विविध योजना ठरवितात. तसेच विविध राजकीय पक्षही या जनगणनेच्या आधारे आपले उमेदवार निवडतात व विविध योजना अमलात आणतात. लोकशाहीचे तत्त्वज्ञान आहे 'जितनी जिनकी संख्या भारी, उतनी उनकी भागिदारी'. यासाठी जैनांची खरी लोकसंख्या राष्ट्रीय जनगणनेत येणे आवश्यक व महत्वाचे आहे.

जैन समाजातील नेते, विविध संस्था, आचार्य भगवंत व साधू–साध्वी यांनी या गोष्टीकडे विशेष लक्ष देऊन या संदर्भात जैन बांधवाना जागृत करुन धर्माच्या कॉलममध्ये फक्त 'जैन' लिहा असा प्रचार करावा.

आपले अस्तित्व चिरनिरंतर टिकवू या. कोट्यावधीची जैन संख्या आता फक्त काही लाखावर जनगणनेत दिसते. जैन धर्म भारत सरकार राष्ट्रीय जनगणनेच्या आधारे नामशेष होऊ नये म्हणून हे जनगणनेचे अभियान संपूर्ण भारतभर करण्याचा संकल्प प्रकट करु या. याचा प्रचार जास्तीत जास्त करा.

प्रेषक : संजय चोरडिया, संपादक – जैन जागृति